हिन्दी - विभाग
डॉ० कविता कुमारी सिंह

P.G. II Sem

"क्या भूलूँ क्या याद करूँ" के आधार पर
के आत्म कथा लेखन के प्रयोजन का विवेचन करें

कोई भी कृति प्रयोजन रहित नहीं
है। आत्मकथा लेखन के क्रम में बच्चन ने निम्न
प्रयोजनों को दृष्टिपथ में रखा है —
आत्मप्रकाशन की अदम्य भावना — बच्चन ने
है — "मैं यह भी बताना चाहता था कि आत्म-चि
मैंने किस मनोवृत्ति से किया है, पर जब शब्दों मे
बता सकता था, उनसे कहीं अधिक समर्थ औ
सशक्त शब्दों में आज से लगभग चा
पूर्व फ्रांस का एक महान लेखक, मानतेन
चित्रण करते समय उसे व्यक्त कर चुका है
आप उस आत्म-चित्रण को पढ़ें, आप
लें। आप उसे कृति के प्रथम पृष्ठ के पूर्व
चाहता हूँ कि लोग मुझे मेरे सरल,

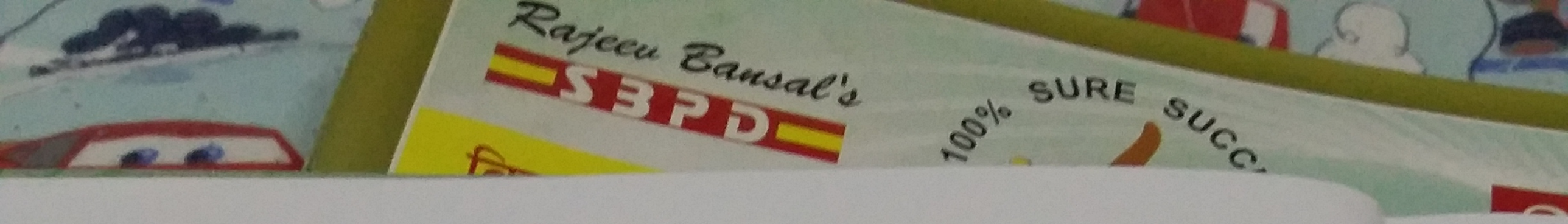

गुण-दोष परक जीवन के सम्मुख रखने का रहा हूँ,
पर ऐसी स्वाभाविक शैली में जो लोक-शील से मर्यादित हो।"

जब लेखक की भावनाएँ अभिव्यक्ति-हेतु
आतुर होती हैं तो वह अपने सृजन में विवश होकर
लीन हो जाता है। इस स्थिति में बच्चन अपनी भूमिका
में लिखते हैं—" लेखन द्वारा अपने को अभिव्यक्त करते
हुए 40 वर्षों से अधिक हो चुके हैं। मैं हृदय पर
हाथ रखकर कह सकता हूँ कि मैंने ऐसा कुछ नहीं
लिखा जो मेरे अन्तर में नहीं उठा, और उसमें नहीं
मड़ा-घुमड़ा।... मुझे कई वर्षों से लगा रहा था,
तक मैं अपने अन्तर में निरन्तर उठती स्मृतियों को
त न कर डालूँगा, तब तक मेरा मन शांत नहीं होगा।"

वैसे तो लेखक अपने भोगे हुए यथार्थ जीवन
की अभिव्यक्ति सम्पूर्ण कलाओं में प्रकारान्तर से करता
है। लेकिन आत्मकथा में यह स्थिति अत्यन्त
त भी है और वांछनीय भी। बच्चन की
ाँ इसका स्पष्ट निदर्शन है। उन्होंने कहा है कि
तार आत्मसंस्कारी है, वैसे ही आत्मकथा की/

कवि-संस्कारी है। 'बसेरे से दूर' में भुक्तयथार्थ को अत्यन्त विस्तार से लिखने की आवश्यकता पड़ी। उनका कथन है — "इस छोटी सी अवधि में जितना मैंने पढ़ा-लिखा, देखा-सुना, जाना-पहचाना, भोगा-सहा, अनुभव-अवगत किया, उतना मैंने इतने ही काल-माप में अपने जीवन में कभी नहीं किया।"

किसी मानसिक अन्तर्द्वन्द्व की शांति अथवा आत्मरहस्योद्घाटन की उद्घोषणा इस कृति में नहीं है। किन्तु लेखक ने अनेक स्थलों पर प्रतिपादित किया है कि आत्मकथा लिखकर उसे पूर्णतृप्ति और मुक्ति का अहसास हुआ है। जिस प्रकार इतिहास पुरुष ऐतिहासिक तथ्यों का विवेचन करते हैं, उसी प्रकार लेखक कवि या कलाकार अपनी आत्मकथाओं में अपनी रचना की सृजन-प्रक्रिया की विवेचन करने का विशेषाधिकार रखते हैं। वैसे जीवनी में भी यदि वे किसी साहित्यकार की रचनाप्रक्रिया का वर्णन अवश्य करते हैं। ले जितना यथार्थ चित्रण आत्मकथा में संभव है तुलना ही नहीं हो सकती। इस आत्मकथा में

और परोक्ष दोनों रूपों में रचना-प्रक्रिया का विवेचन हुआ है, जैसे — "मुझे याद है, मैंने उसके बालों की एक लट अपनी उँगली में लपेट ली और आँखें मूँद ली पर न श्यामा सो रही थी और न मैं सो रहा था। बहुत दिनों बाद मैं उस रात के भावों को वाणी देने योग्य अपने को पा सका।

"मधुशाला" से मेरे चेतन, अवचेतन, अतिचेतन-संस्कार, अनुभूति में संचित स्मृति-कल्पना, भय, आशा-निराशा, वेदना-संवेदना, हर्ष-विमर्श-संघर्ष सबका बड़ा क्षरण हुआ। 'मधुशाला' के बाद मैंने 'मधुबाला' के गीत लिखना शुरू किया जैसे अभी पूरा क्षरण नहीं हुआ था। वास्तव में वह पूर्ण 'मधुकलश' के साथ हुआ। इस प्रकार के विवेचन-विश्लेषण से बच्चन की आत्मकथा के सभी खण्ड भरे पड़े हैं और यही स्वतः आत्मकथा प्राण-तत्व भी है। बच्चन ने अपनी इस आत्मकथा में परनिन्दा और आक्षेप या कटाक्ष करने से बचना चाहा है। लेकिन फिर भी कुछ स्थल ही गये हैं। जैसे सुमित्रानन्दन पंत के विषय में ये कटाक्ष जैसी ही है — जब मुझ से कुछ

तुकबन्दी सधने लगी और मैं अपने कवि होने की
संभावना से व्याकुल होने लगा, तो मैंने भी अप
को बढ़ने के लिए छोड़ दिया। मैं उसे अपना सौ
समझता हूँ कि मेरा अनुकरण उनके बालों तक ही
रहा, यदि मैं उनकी शैली का अनुकरण करता तो
गया होता।"

आत्मकथा की विशिष्ट उपयोगिता है
उससे प्राप्त करके आगामी पीढ़ियों को अपने
आने वाले कष्टों और कंकरों का ज्ञान हो स
कारण आत्मकथा वैयक्तिक निधि होकर भी स
हिताय सिद्ध होती है। वैसे भी मानवीय जीव
सामाजिकता की सुदृढ़ नींव और भित्ति उसी
तैयार होती है कि पूर्व पीढ़ी के उदाहरण अ
पीढ़ी के लिए मील पत्थरों के निर्माण बन